C-6

लिंग विद्यालय एवं समाज

(Gender school and society)

Unit -1

Teach Sir

लिंग का अर्थ :-

संसार में प्राय: सभी प्राणियों का आविर्भाव दो रूपों में हुआ है- स्त्री और पुरुष। मनुष्य की भी उत्पत्ति दो रूपों में हो पाई है- स्त्री और पुरुष जिसे प्राय: स्त्रीलिंग और पुल्लिंग कहते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों के शारीरिक संरचना, उनकी अभिलाषाओं, मनोवृत्तियों, रुचियों, कार्यकलापों इत्यादि में अन्तर होता है। लिंग के माध्यम से ही स्त्री या पुरुष का निर्धारण किया जाता है।

पिता के गुणसूत्र में (XY) दोनों पाया जाता है। जबकि माता में केवल (XX) गुणसूत्र ही मौजूद होते हैं। पिता Y और माता (X) दोनों दोनों का गुणसूत्र (XY) के मिलने से पुरुष संतान का जन्म होता है। जबकि पिता का (X) और माता (X) दोनों गुणसूत्र (XX) मिलने से कन्या संतान का जन्म होता है। लिंग के निर्धारण में जैविक तत्वों की ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परन्तु इस हेतु महिला या पुरुष किसी की इच्छा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

फेमिनिस्ट विद्वानों के अनुसार :-

लिंग को स्त्री-पुरुष विभेद के सामाजिक संगठन अथवा स्त्री-पुरुष के मध्य असमान संबंधों की व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

पैपनेक विद्वानों के अनुसार :-

लिंग स्त्री तथा पुरुष से संबंधित है। जो स्त्री-पुरुष

Lakshya

की भूमिकाओं को सांस्कृतिक आधार पर परिभाषित करने का प्रयास करता है। एवं स्त्री-पुरुष के विशेषाधिकारों से संबंधित है। सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक आधार पर लिंग समान्यतया शक्ति संबंधों का कार्य तथा असमानता का सामाजिक संगठन है।

लिंग की सामाजिक भूमिका :-

लिंग संबंधी विभिन्न आयामों को समझने के लिए निम्नांकित तथ्यों की जानकारी आवश्यक है।-

1- समाज में लिंग केन्द्रियता :-

समाज की व्यवस्था द्वारा नारी के शरीर को एक ऐसी वस्तु बना दिया गया है। जिसका उपयोग एवं उपभोग समा की इच्छानुसार किया जा सकता है। एक लेखक के अनुसार :- " लिंग का सामाजिक एवं सांस्कृतिक भेद संस्थागत होता है और यह भेद सार्वभौमिक है। इस भेद को प्रकट करने की विधियाँ भिन्न-भिन्न देश एवं काल में भिन्न-भिन्न होती है। किन्तु प्रत्येक समाज में केवल महिलाओं ने ही इसके दुष्परिणामों का भोगा है" Ex- स्त्री अपने पुरुष साथी की अपेक्षा अधिक काम करके भी परिवार समाज में वह स्थान प्राप्त नहीं कर पाती जिसकी वह अधिकारिणी होती है।

2- समाज में पुरुष वर्ग की लाभप्रद स्थि

पुरुष वर्ग समाज में सदैव ही लाभ की स्थिति रहा है। यहाँ तक की सरकार द्वारा चलाए ज अनेक विकासपरक कार्यक्रमों का लाभ भी पुरुष को ही प्राप्त होता है। अधिकतर महिलाओं तो इस सन्दर्भ में जानकारी ही नहीं हो

Lakshya

और न ही उनमें इतनी अधिक जागरूकता ही है कि वे इन कार्यक्रमों का लाभ स्वतंत्र रूप से उठा सकें। यही नहीं, परिवार द्वारा लिंग संबंधी स्तर भी प्रदान किए गए हैं और इस संदर्भ में सामाजिक स्तरीकरण करते समय महिलाओं को परिवार द्वारा निम्न दर्जा प्रदान किया गया है।

3. लिंग संबंधी आधुनिक एवं परम्परागत अवधारणा:-